'सेनेटरी नैपकिन पहनने वाला पुरुष'

दक्षिण भारत में तमिलनाडु नाम का राज्य है । इस राज्य के कोइम्बतुर गाँव में घटी सत्य घटना पर आधारित यह कहानी है । नयी–नयी शादी का जोड़ा मेहनत कर अपना गुजारा कर रहा था । एक दिन पति ने पूछा, ''तुम यह क्या छुपा रही हो मुझसे?'' पत्नी बोली, ''जी, कुछ भी तो नहीं !'' लेकिन पति की तेज नजर ने अपनी पत्नी के हाथों में छुपाए गंदे कपड़े को देख ही लिया । उसने मन ही मन सोचा, इतना गन्दा कपड़ा तो मैं अपने स्कूटर पोछने के लिए भी इस्तेमाल नहीं करूँ ! जब उसे पता चला कि वह कपड़ा किस काम के लिए इस्तेमाल किया जाता है; तब से उसने इरादा पक्का किया, महिलाओं को माहवारी के दिनों में उपयोग के लिए अच्छे, सेहतमंद और कम पैसों में आ सकें । ऐसे सेनेटरी नैपकिन्स का निर्माण मैं खुद करूँगा ।

इस पर काम करने के दौरान उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन उसने हार नहीं मानी । उसने नैपकिन बना के अपनी बीवी और बहनों को उपयोग करने के लिए दिए । गाँव की बाकी महिलाओं को भी इस प्रयोग में शामिल होने के लिए उसने पूछा लेकिन महिलाऐं और लड़कियाँ इतनी शर्मीली थी कि वे अपनी राय भी देने में हिचकिचाती थी । मेडिकल कॉलेज की लड़कियों ने थोड़ी बहुत सहायता की थी; लेकिन परिणाम समझने के लिए उतना काफी नहीं था । उसे स्वयं द्वारा बनाये गए नैपकिन की उपयोगिता जानने के लिए ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को उसका प्रयोग करना जरुरी था । इस समस्या का हल उसे तब मिला जब उसने खुद पर प्रयोग करने के लिए सोचा । एक रबर से बनी बैग में बकरे का खून भर दिया। यह खून इकठ्ठा करने के लिए उसके एक दोस्त ने मदद की जो कि कसाई था । इस वस्तु को पेट पर बाँध कर वह प्रयोग करने लगा । प्रयोग के समय वह खुद सेनेटरी नैपकिन पहनता था । रबर के बैग से जुडी प्लास्टिक की नली से खून की बूँदें नैपकिन पर टपकती थी । इसे पहन कर वह साईकिल चलाना, कूदना जैसे कुछ काम करता था । सारी कोशिशों में उसके कपड़ों पर खून के लाल धब्बे लग जाते थे । लोगों का उसकी तरफ देखने का नजरिया बदल गया था । कुछ लोग तो मान के चल रहे थे कि उसे कोई यौन विकार हुआ है । इसी कारण बीवी इसे छोड़ कर मायके चली गयी । माँ ने भी घर छोड़ दिया; लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ ।

भारत की सिर्फ 2 % महिलाऐं नैपकिन का उपयोग करती थी; बाकि सारी महिलाएँ कपडे का इस्तेमाल कर रही थी । कपड़ा कहाँ, वह तो गन्दा पोछा ही था । लज्जा के कारण वे उसे बाहर धूप में नहीं सुखाती थीं । इसे धूप में सुखाती तो रोगकारक जंतु मर सकते थे । लेकिन ऐसा ना करते हुए वे खुद पर संकट मोल ले रही थी । उसे यह गन्दा व्यवहार गाँव से नष्ट कर देना था । इसके लिए गरीब औरतें खर्च कर खरीद सकें, ऐसे नैपकिन बनाना जरुरी था । अपने प्रयोग उसने बिना रूकावट चालू रखें । करीबन 4 साल लग गए उसे अच्छे नैपकिन्स बनाने के लिए । नैपकिन्स तैयार करने के लिए लगने वाली सारी मशीन भी उसने खुद ही

बनायी । ऐसी मशीन जिसे चलाने के लिए आपको पढाकू होना जरुरी नहीं है । इससे गाँव की अनपढ महिलाओं के लिए काम काज का एक रास्ता भी खुल गया । ये सारी मशीनें भारत की कम आमदनी वाली महिलाओं को मिलें । यह उसका उद्देश्य था । उसके इस काम को आगे बढाने के लिए अनेकों संस्थाओं ने हाथ आगे बढाया एवं महिलाओं के बचत समूहों को भी शामिल कर लिया । आज के दिन भारत के 23 राज्यों में कम कीमत में उपलब्ध, अच्छी किस्म के ये नैपकिन्स महिलाएं तैयार कर रही हैं । 'अरुणाचल मुरूगानंदम' अपनी सफलता का श्रेय अपनी पत्नी को देते हैं । उसी के लिए ही तो उसने यह सारी कसरत की थी और उनकी वजह से आज 'जयश्री इंडस्ट्रीज' जैसा बड़ा काम खड़ा हो पाया ।

बेहाल जिंदगी, बचपन में ही पापा का साया सर से हट गया था । माँ खेती में मोल मजूरी करने वाली । ऐसे हालातों से गुजरते हुए भी मुरूगानंदम ने अपना रास्ता खुद बनाया और सफलता के इस मुकाम तक पहुँच पाए । आज अनेकों देशों में उन्हें लेक्चर के लिए बुलाया जाता है । वह उनके प्रयोगों से लज्जित नहीं हुए बल्कि 'सेनेटरी नैपकिन पहनने वाला पुरुष' पहचान वह स्वाभिमान से बताते हैं ।